सीपीईसी (CPEC) का दूसरा चरण

प्रलिम्सि के लयि:

चीन-पाकस्तिान आर्थकि गलयिारा, बेल्ट एंड रोड इनशिएिटवि, ग्वादर पोर्ट, पाकस्तिान अधकिृत कश्मीर, स्ट्रग्सि ऑफ पर्ल्स, पनामा नहर, एलओसी।

मेन्स के लयि:

भारत के हतिों पर देशों की नीतयिों और राजनीतकिा प्रभाव, भारत को शामलि और/या इसके हतिों को प्रभावति करने वाले समूह और समझौते, सीपीईसी और इसका प्रभाव।

चर्चा में क्यों?

हाल ही में पाकस्तिान ने 60 बलियिन अमेरकिी डॉलर के चीन-पाकस्तिान आर्थकि गलयिारे (CPEC) के दूसरे चरण को शुरू करने हेतु चीन के साथ एक नए समझौते पर हस्ताक्षर कयि हैं।

- इससे पहले अरबों डॉलर के **चीन-पाकस्तिान आर्थकि गलयिारा (CPEC)** बुनयिादी ढांचा परयिोजना में शामलि होने को लेकर पाकस्तिान ने तालबिान के नेतृत्व वाले अफगानस्तिान के साथ चर्चा की थी।
- दूसरा चरण मुख्य रूप से वशिष आर्थकि क्षेत्रों (SEZs) के वकिास और औद्योगीकरण के इर्द-गर्दि घूमता है।

चीन-पाकस्तिान आर्थकि गलयिारा:

- CPEC चीन के **उत्तर-पश्चमिी झजियिांग उइगुर स्वायत्त क्षेत्र और पाकस्तिान के पश्चमिी प्रांत बलूचस्तिान** में ग्वादर बंदरगाह को जोड़ने वाली बुनयिादी ढाँचा परयिोजनाओं का **3,000 कलिोमीटर** लंबा मार्ग है।
- यह **पाकस्तिान और चीन के बीच एक द्वपिक्षीय परयिोजना** है, जसिका उद्देश्य ऊर्जा, औद्योगकि और अन्य बुनयिादी ढाँचा वकिास परयिोजनाओं के साथ राजमार्गों, रेलवे एवं पाइपलाइन्स के नेटवर्क द्वारा पूरे पाकस्तिान में कनेक्टविटिी को बढ़ावा देना है।
- यह चीन के लयि ग्वादर बंदरगाह से मध्य पूर्व और अफ्रीका तक पहुँचने का मार्ग प्रशस्त करेगा ताकि चीन हदि महासागर तक पहुँच प्राप्त कर सके तथा चीन बदले में पाकस्तिान के ऊर्जा संकट को दूर करने और लड़खड़ाती अर्थव्यवस्था को स्थरि करने के लयि पाकस्तिान में वकिास परयिोजनाओं का समर्थन करेगा।
- CPEC, बेल्ट एंड रोड इनशिएिटवि **(BRI)** का एक हस्सिा है। वर्ष 2013 में शुरू कयि गए 'बेल्ट एंड रोड इनशिएिटवि' का उद्देश्य दक्षणि-पूर्व एशयिा, मध्य एशयिा, खाड़ी क्षेत्र, अफ्रीका और यूरोप को भूमि एवं समुद्री मार्गों के नेटवर्क से जोड़ना है।

CPEC पर भारत का रुख:

- **CPEC को लेकर भारत ने चीन के समक्ष वरिोध** जताया है क्योंकि पाकस्तिान का कब्ज़ा वाला कश्मीर (PoK) क्षेत्र भी इसके तहत आता है।
- भारत, क्वाड **(भारत, अमेरकिा, ऑस्ट्रेलयिा और जापान)** का सदस्य है जो बुनयिादी ढाँचे हेतु देशों को यथार्थवादी वकिल्प प्रदान कर सकता है एवं चीनी प्रतक्रियिा के लयि उपयुक्त हो सकता है।
    - **उदाहरण के लयि:** ब्लू डॉट नेटवर्क **(BDN)** और 'बलि्ड बैक बेटर वर्ल्ड (B3W) पहल'।

भारत के लयि CPEC के नहितिार्थ:

- **भारत की संप्रभुता:** भारत CPEC की लगातार आलोचना करता रहा है, क्योंकि यह पाकस्तिान अधकिृत कश्मीर से होकर गुज़रता है, जो भारत और पाकस्तिान के बीच एक ववािदति क्षेत्र है।
- कॉरडिोर को भारत की सीमा पर स्थति कश्मीर घाटी के लयि वैकल्पकि आर्थकि सड़क संपर्क के रूप में भी माना जाता है।
- **नयिंत्रण रेखा (एलओसी)** के दोनों ओर कश्मीर को 'वशिष आर्थकि क्षेत्र' घोषति करने के लयि स्थानीय व्यापारयिों और राजनीतज्ञिों द्वारा आह्वान कयि गया है।

- अगर गलिगति-बाल्टस्तिान औद्योगकि वकिास के साथ वदिशी नविश को आकर्षति करता है, तो CPEC के सफल होने के बाद अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त पाकस्तिानी क्षेत्र के रूप में इस क्षेत्र की धारणा को और मज़बूती मलिेगी, जसिसे 73,000 वर्ग कमिी. भूमपिर भारत का दावा कमज़ोर हो जाएगा जो कि 1.8 मलियिन से अधकि लोगों का घर है।
- **समुद्र के माध्यम से व्यापार पर चीनी नयिंत्रण:** पूर्वी तट पर प्रमुख अमेरकिी बंदरगाह चीन के साथ व्यापार करने के लयि **पनामा नहर** पर नर्भिर हैं।
    - एक बार CPEC का कार्य पूरा हो जाने के बाद चीन अधकिांश उत्तरी व लैटनि अमेरकिी उद्यमों के लयि एक 'छोटा और अधकि कफियती' व्यापार मार्ग की पेशकश करने की स्थतिमिें होगा।
    - यह चीन को उन शर्तों को नर्धिारति करने की शक्तदिेगा जनिके द्वारा अटलांटकि एवं प्रशांत महासागरों के बीच माल की अंतर्राष्ट्रीय आवाज़ाही होगी।
- **चीन की 'स्ट्रगि ऑफ पर्ल्स' नीति:** चीन अपनी महत्त्वाकांक्षा के साथ हदि महासागर में उपस्थतिबिढ़ा रहा है; यह अमेरकिा द्वारा गढ़ा गया एक शब्द है और अक्सर भारतीय रक्षा वशि्लेषकों द्वारा हवाई क्षेत्रों व बंदरगाहों के नेटवर्क के माध्यम से भारत को घेरने की चीनी रणनीतकिो संदर्भति करने के लयि इस्तेमाल कयिा जाता है।
    - चटगाँव बंदरगाह (बांग्लादेश), हंबनटोटा बंदरगाह (श्रीलंका), पोर्ट सूडान (सूडान), मालदीव, सोमालयिा और सेशेल्स में मौजूदा उपस्थतिकि साथ कम्युनस्टि राष्ट्र (चीन) द्वारा ग्वादर बंदरगाह पर नयिंत्रण के माध्यम से हदि महासागर पर पूर्ण प्रभुत्व स्थापति करना है।
- **आउटसोर्सगि गंतव्य के रूप में पाकस्तिान का उदय:** यह पाकस्तिान की आर्थकि प्रगतकिो गतदिेने हेतु तैयार है।
    - मुख्य रूप से कपड़ा और नर्मिाण सामग्री उद्योग में भारत व पाकस्तिान की दोनों देशों के शीर्ष तीन व्यापारकि भागीदारों में से दो देश अमेरकिा और संयुक्त अरब अमीरात में सीधी प्रतस्पिर्द्धा है।
    - मुख्य रूप से भारतीय नर्यिात चीन से कच्चे माल की सुलभ आपूर्तकि साथ पाकस्तिान को इन क्षेत्रों में एक प्रतस्पिर्द्धी क्षेत्रीय बाज़ार बनने हेतु उपयुक्त परस्थितियिाँ उपलब्ध होंगी।
- **BRI द्वारा मज़बूत व्यापार और चीन का प्रभुत्व: चीन की बीआरआई परयिोजना जो बंदरगाहों, सड़कों और रेलवे के नेटवर्क के माध्यम से चीन और शेष यूरेशयिा के बीच व्यापार संपर्क पर केंद्रति है, को अक्सर इस क्षेत्र में राजनीतकि रूप से हावी होने की चीन की योजना के रूप में देखा जाता है। CPEC इसी दशिा में एक और बड़ा कदम है।**
    - चीन जो कि बाकी वैश्वकि अर्थव्यवस्थाओं द्वारा समर्थति और अधकि एकीकृत है, संयुक्त राष्ट्र एवं अलग-अलग राष्ट्रों के साथ बेहतर स्थतिमिें होगा, जो संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परषिद में भारत की स्थायी सीट हासलि करने की योजना को प्रभावति कर सकता है।

आगे की राह:

- CPEC पर भारत की भवषि्य की रणनीतBRI परयिोजना के संभावति लाभों के साथ-साथ नुकसान के सावधानीपूर्वक पुनर्मूल्यांकन पर आधारति होनी चाहयि।
- भारत को अपनी रणनीतकि परयिोजनाओं जैसे- बांग्लादेश, चीन, भारत और म्याँमारआर्थकि गलयिारे (BCIM) और चाबहार बंदरगाह के वकिास पर कार्य की गतकिो तीव्र करना चाहयि।
- एशयिा-अफ्रीका ग्रोथ कॉरडिोर भारत-जापान आर्थकि सहयोग समझौता है, यह भारत को महत्त्वपूर्ण रणनीतकि लाभ प्रदान कर चीन को प्रतसिंतुलति कर सकता है।

स्रोत: इंडयिन एक्सप्रेस

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/second-phase-of-cpec